National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2019; 1(23): 36-40
© 2019 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.ममता गुप्ता
संस्कृतपालि एवं प्राकृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

Correspondence:
डॉ.ममता गुप्ता
संस्कृतपालि एवं प्राकृत विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

रामकथा में पुष्पक विमानयात्रा -एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.ममता गुप्ता

विशद एवं विलक्षण साहित्य से समृद्ध संस्कृत भाषा में वाल्मीकि, भास, भवभूति, कालिदास, माघ आदि महाकवियों की सुदीर्घ श्रृंखला है। इस श्रृंखला की अटूट कड़ी है कविराज राजशेखर जैसा वे स्वयं कहते हैं-

बभूव वल्मीकिभवः पुरा कविः ततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
स्थितः पुनर्योभवभूति रेखया स वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।[1]

वाल्मीकिरामायण लौकिकसाहित्य की प्राचीनतम कृति है। परस्पर प्रेम निमग्न क्रौञ्च-मिथुन में से एक को व्याध के द्वारा मारे जाने पर महर्षि वाल्मीकि के हृदय की जो पीड़ा श्लोक रूप में प्रस्फुटित हुई थी, उसी का पल्लवित रूप है रामायण-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।
पादबद्धोऽक्षरषमस्तन्त्रीलयसमन्वितः।
शोकार्तस्य प्रवृत्तो मे श्लोको भवतु नान्यथा।।
सोऽनुव्याहरणाद्भूयः शोकः श्लोकत्वमागतः।
तस्य बुद्धिरियं जाता वाल्मीकेर्भावितात्मनः।
कृत्स्नं रामायणं काव्यमीदृषैः करवाण्यहम्।।[2]

निःसन्देह रामायण एक अनुपम रचना है। इसने जनसाधारण और बुद्धिजीवियों दोनों को समान रूप से प्रभावित किया। यही कारण है कि रामायण एक ओर तो प्रत्येक भारतीय के लिए धार्मिक आस्था का विषय है तो दूसरी ओर कवियों और नाटककारों के लिए प्रेरणा का स्रोत। संस्कृत साहित्य में रामकथा को आधार बना कर लिखे गये काव्यों की सुदीर्घ परम्परा है जो आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। काव्य की लगभग समस्त विधाओं में रामकथा का संकीर्तन किया गया है। यायावरीय कविराज राजशेखर कृत 'बालरामायण' भी इसी परम्परा का अङ्ग है।

बालरामायण दषाङ्क विपुलकाय नाटक है जो रामकथा पर आधारित है। स्वयं को वाल्मीकि, भतृमेण्ठ और भवभूति का अवतार मानने वाले राजशेखर अपने दशाङ्क- महानाटक के लिए रामकथातिरिक्त अन्य विषय का ग्रहण कर ही नहीं सकते थे।[3]

वाल्मीकि राम कथा के आदि प्रणेता हैं, अतः रामकथाश्रित बालरामायण नाटक पर उनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है, नाटक के प्रारम्भ में ही राजशेखर ने आदिकवि के उत्स को स्वीकार करते हुए उनकी वन्दना की है-

योगीन्द्रश्छन्दसां स्रष्टा रामायणमहाकविः।
वल्मीकिजन्मा जयति प्राच्यः प्राचेतसो मुनिः।।[4]

वाल्मीकि रामायण महाकाव्य विधा की रचना है। इसके २४,००० श्लोक हैं। रामायण के सात काण्डों राम के जन्म से ले कर महाप्रयाण तक सम्पूर्ण रामचरित का वर्णन किया गया है।

बालरामायण की कथावस्तु राम के राज्याभिषेक तक ही है। उत्तररामचरित का वर्णन राजशेखर ने नहीं किया है। इसका कारण यह हो सकता है कि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के बालकाण्ड में रामचरित का जो संक्षिप्त वर्णन किया है वह राम के राज्याभिषेक पर्यन्त ही है अतः

राजशेखर ने बालरामायण के लिए राम के राज्याभिषेक तक की वस्तु को ही ग्रहण किया है अथवा सम्भवतः नाटक के औचित्य के निर्वाह के लिए राजशेखर ने कथावस्तु को राज्याभिशेक तक ही सीमित रखा है।

यद्यपि राजशेखर ने रामायण का कथा को आधार बनाया है तथापि उन्होने अपने नाटक की वस्तु में अनेक परिवर्तन तथा नवीन उद्भावनाएँ की है। नाटक के आरम्भ में ही इस ओर सङ्केत कर दिया है। पारिपार्शिवक द्वारा यह पूछे जाने पर कि वाल्मीकि ने स्वयं देखकर जिस रामचरित का वर्णन किया था उससे विशिष्ट यह कवि अपने चर्मचक्षुओं से क्या देखेगा? सूत्रधार के माध्यम से राजशेखर उत्तर देते हैं-

सूत्रधार- मारीश मा मैवम्

वदनेन्दुषु वामदृषामिन्दीवरपत्रसङ्घटितम्।
रसनासु च सुकवीनां निवसति सारस्वतं चक्षुः।[5]

प्रस्तुत शोधपत्र में वाल्मीकिरामायण एव राजशेखर कृत बालरामायण में वर्णित पुष्पकविमानयात्रा प्रसङ्ग का समीक्षात्मक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। बालरामायण का प्रत्येक अङ्क अपनी कथावस्तु के अनुसार विशिष्ट अभिधानों से अभिहित है। दषम् अङ्क का अभिधान **'राघवानन्द'** है। इसी अङ्क में विमान-यात्रा प्रसङ्ग वर्णित है।

रामायण में युद्धकाण्ड के 124वें सर्ग से यात्रा प्रसङ्ग प्रारम्भ हो कर 130वें सर्ग तक चलता है। राम सीता के अपहरणकर्ता रावण का वध करके उसके अनुज विभीषण को लङ्केष के पद पर अभिषिक्त कर देते हैं। राम को यथाशीघ्र अयोध्या गमनोत्सुक जान कर विभीषण **'पुष्पक'** नामक विमान को प्रस्तुत करते है। पुष्पक यक्षराज कुबेर का यान है जो आकाषमार्ग का आश्रय लेकर मन की इच्छा के अनुसार संचरण करता है। रावण ने कुबेर से इस विमान को छीन लिया था। रावण का वध हो जाने के पश्चात् विमान पर लङ्केश विभीषण का अधिकार हो गया गया।

अयोध्यामागतो ह्येश पन्थाः परमदुर्गमः।
एवमुक्तस्तु काकुत्स्थं प्रत्युवाच विभीषणः।।
अह्ना त्वां प्रापयिष्यामि तां पुरीं पार्थिवात्मज।
पुष्पकं नाम भद्रं ते विमानं सूर्यसन्निभम्।।
मम भ्रातुः कुबेरस्य रावणेनाहृतं बलात्।
हृतं निर्जित्य संग्रामे कामगं दिव्यमुत्तमम्।।
त्वदर्थे पालितं चैतत्तिष्ठत्यतुलविक्रम।
तदिदं मेघसङ्काशं विमानमिह तिष्ठति।।
तेन यास्यसि यानेन त्वमयोध्यां गतज्वरः।[6]

वाल्मीकिरामायण में पुष्पक विमान का सुन्दर चित्रण किया गया है। वह सुवर्ण निर्मित था उसमें अनेक रत्न जटित थे। मुक्तामणि के बने गवाक्ष थे, वह कूटागारों और हर्म्यों से युक्त तथा श्वेत पताकाओं से सुसज्जित था-

.....ततः काञ्चनचित्राङ्गं वैडूर्यमयवेदिकम्।।
कूटागारैः परिक्षिप्तं सर्वतो रजतप्रभम्।
पाण्डुराभिः पताकाभिर्ध्वजैश्च समलङ्कृतम्।।
शोभितं काञ्चनर्हम्यैर्हेमपद्मविभूषितम्।
प्राकीर्णं किङ्किणीजालैर्मुक्तामणिगवाक्षितम्।।
बहुभिर्भूषितं र्हम्यर्मुक्ता रजतसन्निभैः।
तलैः स्फाटिकचित्राङ्गैवैडूर्यश्च वरासनैः।।[7]

बालरामायण में राजशेखर पुष्पक विमान का परिचय एक पद्य में ही दे देते हैं। राम सीता को पुष्पक विमान दिखाते हुए कहते हैं-

यत्सख्यु शषिशेखरस्य धनदाल्लङ्केष्वरेणाहृतं,
तन्मन्थाच्च विभीषणे परिहृतं दत्तं च तेनापि नः।
किञ्चिन्यञ्चितकन्धेण षिरसा धृत्वा प्रसन्नां दृषं,
तद्भक्त्या ललिताङ्गि पुष्पकमिदं वन्दस्य मोदस्य च।।[8]

वाल्मीकिरामायण मे विमान के आकाषमार्ग का आश्रय लेने पर राम सीता को सर्वप्रथम त्रिकुट पर्वत पर स्थित लङ्का नगरी तथा युद्धभूमि के दर्शन कराते है-

कैलाश शिखराकारे त्रिकूटशिखरे स्थिताम्।
लङ्कामीक्षस्व वैदेहि निर्मितां विश्वकर्मणा।।[9]

रामायण के समान बालरामायण में भी राम सीता को सर्वप्रथम लङ्का के ही दर्शन कराते हैं। समीप में युद्धक्षेत्र है जहां राम-रावण का युद्ध हुआ था। महर्षि वाल्मीकि ने जहाँ प्रत्येक योद्धा के नामोल्लेख साथ युद्धक्षेत्र का विस्तृत वर्णन किया है।[10] वहीं राजशेखर ने इसे दो पद्यों में ही सीमित कर दिया है जिसमें से एक पद्य बहुत प्रसिद्ध है-

अत्रासीत् फणिपाषबन्धनविधिः शक्त्या भवद्देवरे,
गाढं वक्षसि ताडिते हनुमता द्रोणाद्रिरत्राहृतः।
दिव्यैरिन्द्रजिदत्र लक्ष्मणशरैर्लोकान्तरं लम्भितः,
केनाप्यत्र मृगाक्षि राक्षसपतेः कृत्ता च कण्ठाटवी।।[11]

वाल्मीकिरामायण में युद्ध क्षेत्र के वर्णन पष्चात् समुद्र एवं सेतुबन्ध का दर्शन कराया गया है परन्तु बालरामायण में विमान युद्धभूमि का अतिक्रमण करके जैसे ही समुद्र के ऊपर आता है वैसे ही राम कहते हैं -

हंहो विमानराज! विमुच्यवसुधासविधवर्तिनीं गतिं किञ्चिदुच्चैर्भव,
कुतूहलिनी जानकी दिव्यदर्शनव्यतिकरस्य।[12]

'हे विमान राज ! पृथ्वी के समीप की गति को त्याग कर कुछ ऊपर हो जाओं क्योंकि सीता को दिव्य वस्तुओं के दर्शन का कुतूहल है' और विमान वेगपूर्वक गन्धर्वों, किन्नरों और विद्याधरों से संकुल आकाश-मार्ग का आश्रय ले लेता है। यहीं पर महेन्द्र की आज्ञा से **'रत्नशेखर'** नामक विद्याधरकुमार दिक्दर्शक (गाइड) के रूप में उनके साथ हो लेता है। विमान लङ्का से सीधा उस हिमालय पर जा पहुँचता है जो पार्वती के पिता, मैना के पति, षिव के श्वसुर तथा गणेश के मातामह है। यहीं (हिमालय पर) दुग्धधवल कैलास, कुबेर की नगरी अलकापुरी, मनोरम मानसरोवर, समुद्रमन्थन के मन्थन दण्ड मन्दराचल, क्षीरोदधि, सुमेरुपर्वत और अमरावती के भी दर्शन होते है। राम में दिव्य वस्तुओं के दर्शन की उत्कष्ठा अभी शेष है। अतः विमान कुछ और ऊपर जा कर चन्द्रलोक दिखाता है। आगे मनुष्यों के लिए अगम्य **'भुवः'** (ब्रह्म) लोक है, मर्यादा पुरुषोत्तम इस क्षेत्र का उल्लंघन नहीं करते हैं। रत्नशेखर राम से अनुमति लेकर चला जाता है। इसी समय सीता **'रामप्रतापप्रसर प्रथम-मार्ग महासेतुबन्धं पश्यामः'** यह इच्छा करती हैं और पुष्पक पुनः लङ्का के समीप समुद्र के ऊपर आ जाता है।[13]

दोनों ही ग्रन्थों में छः पद्यों में समुद्र एवं सेतुबन्ध का वर्णन है। यहाँ समुद्र को इक्ष्वाकुओं का कीर्तिधारक, जल को ईंधन बनाने वाले बडवानल से युक्त, चन्द्रादि रत्नों का उद्गम और मैनाकादि पर्वतों की शरणस्थली बताया गया है जबकि वाल्मीकिरामायण में समुद्र में हिरण्यनाभ पर्वत का वर्णन किया गया है।

वाल्मीकिरामायण में सेतुबन्ध को पार करके किष्किन्धा आते हैं।

अत्र राक्षसराजेऽयमाजगाम विभिषणः।
एपा सा दृश्यते सीते किष्किन्धा चित्रकानना॥[14]
सुग्रीवस्य पुरी रम्या यत्र वाली मया हतः।
अथ दृष्ट्वा पुरीं सीता किष्किन्धां वालिपालिताम्॥[15]

राम यहाँ कुछ देर रुकते हैं और सीता की इच्छानुसार सुग्रीवादि वानर श्रेष्ठों की पत्नियों को भी विमान पर बैठा लेते है-

अब्रवित्प्रश्रित वाक्यं रामं प्रणयसाध्वसा।
सुग्रीवप्रियभार्याभिस्ताराप्रमुखतो नृप॥
अन्येपां वानारेन्द्राणा स्त्रीभिः परिवृता ह्यहम्।
गन्तुमिच्छे सहायोध्यां राजधानीं तवयाऽनघ॥[16]

यहाँ से राम-सुग्रीवमैत्रीस्थल ऋष्यमूक पर्वत, कमलवनों से सुषोभित पम्पासरोवर, शबरी आश्रम, जनस्थान और पंचवटी होते हुए गोरावरीतट पर स्थित अगस्त्याश्रम पहुँचते हैं।[17]

बालरामायण में सिंहलों के देश के बाद माल्यवान पर्वत दृष्टिगत होता है। यहीं से काम के सहयोगी दक्षिणपवन चलते है। यहीं राम से वर्षाकाल व्यतीत किया था। इसी पर्वत पर ताम्रपर्णी नदी है। यहीं सामने अगस्त्याश्रम है। बालरामायण में अगस्त्याश्रम के पास गोदावरी नदी और पंचवटी का उल्लेख नही किया गया है।[18]

वाल्मीकिरामायण में राम आकाशमार्ग से ही अगस्त्याश्रम की पवित्रता का दर्शन करके आगे बढ़ जाते हैं परन्तु बालरामायण में वे आश्रम का अतिक्रमण न करके विमान को नीचे उतारते हैं। भगवती लोपामुद्रा सहित अगस्त्य ऋषि का दर्शन करते हैं और दो पुत्रों की प्राप्ति का आषीर्वाद भी पाते हैं। अगस्त्य-लोपामुद्रा-राम संवाद भावुकतापूर्ण है। लोपामुद्रा का राम के प्रति वात्सल्य भाव द्रष्टव्य है –

अभ्युद्धृतैर्गिरिभिरम्बुधिसेतुहेतोः
श्वश्रुरियं भगवती कुपिता किमुर्वी।
कुम्भोद्भवस्य कथितं न पुनः किमस्य
जाता यदेकचुलुके न चतुः समुद्री।

अर्थात् सेतु के लिये पत्थरों को इधर-उधर हटा कर अपनी सास को क्यों कुपित किया, इन्हीं अगस्त्य से क्यों नही कहा जिनके एक ही चुल्लू में चारों समुद्र आ गये थे। अगस्त्याश्रम का यह प्रसङ्ग राजशेखर की मौलिक कल्पना है।

अगस्त्याश्रम के आगे का मार्ग दोनों ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न है। वाल्मीकिरामायण में विमान सुतीक्ष्णमुनि के दीप्त आश्रम तथा शरभङ्ग ऋषि महान् के आश्रम के ऊपर से होते हुए चित्रकूट पर्वत पर पहुँचता है, यहीं अत्रि और अनुसूया की तपस्थली है। जो अनुसूया द्वारा आह्वान की गयी मन्दाकिनी से पवित्र है। यहां सर्वत्र राम द्वारा व्यतीत किये गये दिवसों की सुखद स्मृतियाँ प्रकीर्ण है। यहाँ से आगे बढ़ने पर गङ्गा यमुना की सङ्गम स्थली के दर्शन होते हैं। गिरिराज चित्रकूट और अत्रिमुनि के आश्रम को पार करते हुए पुण्य सलिला गङ्गा के तट पर आते हैं। यहाँ से भरद्वाज आश्रम, श्रृङ्गवेरपुर और सरयूतट पर स्थित अयोध्या के दर्शन हो रहे है।[19] अयोध्या जाने से पूर्व राम भरद्वाज ऋषि के आश्रम पर रुकते हैं माताओं, भाइयों और प्रजा का कुषलक्षेम ज्ञात करके ऋषि की आज्ञानुसार रात्रि वहीं व्यतीत करते है। यहाँ से वे नन्दिग्राम जाते हैं जहाँ से भरतादि को लेकर अयोध्या चले जाते हैं।[20]

बालरामायण में राम की प्रयाग तक की यात्रा नगरों के ऊपर होते हुए करते हैं। राजशेखर ने इस मार्ग में द्रविड़ देश (केरल)[21], सप्तगोदावरी[22], कर्णाटदेश[23], महाराष्ट्र (विदर्भ)[24] नर्मदा[25],लाट देश[26], उज्जयिनी[27], मालवा[28] का उल्लेख किया हे। इसके पष्चात् यमुना के दर्शन होते हैं। यहीं पांचाल देश, महोदय नगर तथा गाधीपुर हैं। यमुना के आगे पार्वतीपति के मस्तक की माला अर्थात् गङ्गा नदी और उसी के समान पवित्र कान्यकुब्ज नगरी से होता हुआ पुष्पक गङ्गायमुना के संगम प्रयाग पहुँच जाता है।[29]

न्यग्रोधोऽयं वन्द्यतां श्यामनामा शम्भोर्भष्टा शेखराज्जाह्नवीयम्।
कालिन्दी च प्लाविता तत्पयोभिस्तीर्थं ह्येतत् स्वर्गमार्गःप्रयागः।।[30]

बालरामायण में राजशेखर ने प्रयाग के साथ वाराणसी के भी दर्शन करा दिये है। वाराणसी की चर्चा से सीता को मातृनगरी मिथिला का स्मरण हो आता है और राम विमान से मिथिला जाने का आग्रह करते हैं। मिथिला दर्शन के समय ही हनुमान आकर निवेदन करते हैं कि वषिष्ठ, भरतादि राम के आने का समाचार पा कर अभिशेक के लिए उत्सुक हो रहे हैं। तब राम विमान से अयोध्या आकर नीचे उतरने के लिए कहते हैं और विमान अयोध्या के राजमार्ग पर अवतरित हो जाता है।[31]

वाल्मीकिरामायण महाकाव्य है और बालरामायण नाटक है अतः दोनों की वर्णन शैली में पर्याप्त भिन्नता है जो उचित ही है। वाल्मीकिरामायण के अनुसार विमान में राम, सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव विभीषणादि के साथ उनके परिजन है जबकि बालरामायण में इन सबके साथ त्रिजटा भी उपथित है।[32] वाल्मीकिरामायण में सम्पूर्ण प्रसंग में राम ही एकमात्र वक्ता है। बालरामायण में इस मार्ग वर्णन में राम के साथ सीता, लक्ष्मण, सुग्रीव, त्रिजटा और रत्नशेखर भी भाग लेते हैं।

बालरामायण और वाल्मीकिरामायण में यात्रा प्रसंग का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वाल्मीकिरामायणगत वर्णन अधिक स्वाभाविक है, वर्णनों को यथोचित विस्तार दिया गया है। बालरामायण में यह वर्णन का अधिक काव्यात्मक और चमत्कार से युक्त है। वे एक प्रयोग-धर्मी रचनाकार है। कथापरिवर्तन में वे सिद्धहस्त है। यहाँ उन्होंने राम तथा सीता के व्याज से पाठकों को स्थानों का भी दर्शन करा दिया जिनका मार्ग में आना सम्भव ही नहीं था। वाल्मीकि रामायण में लङ्का से अयोध्या तक का अधिकतर मार्ग वनों के ऊपर से होकर जाता है किन्तु बालरामायण में विमान अधिकांषतः नगरों के ऊपर से संचरण करता है।

राजशेखर के पूर्व वाल्मीकिरामायण को आधार पर रचे गए अनेक ग्रन्थ उपलब्ध थे। इस परम्परा में कालिदास और भवभूति का नाम विशेष उल्लेखनीय है। राजशेखर ने इस परम्परा को उत्तराधिकार में प्राप्त किया था। बालरामायण की रचना करते समय राजशेखर के सम्मुख वाल्मीकिरामायण के अतिरिक्त रघुवंश , महावीरचरित आदि काव्यकृतियाँ भी थीं जिनका प्रभाव भी राजशेखर की इस नाट्यकृति पर परिलक्षित होता है। बालरामायण मे पुष्पक विमानयात्रा प्रसङ्ग में लङ्का के पश्चात् दिव्य लोकों का जो वर्णन राजशेखर ने किया है। उस पर भी भवभूति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

महावीररचित में पुष्पक विमान लङ्का से अयोध्या की ओर प्रस्थान करता है। समुद्र, सेतु, अगस्त्याश्रम, दण्डकारण्य को पार करने के पश्चात् अत्यन्त ऊँचे सह्याद्रि का उल्लङ्घन करने के लिये विमान को ऊपर उठना पड़ता है-

विभीषणः- देव,अत्युच्चैः किलायं सह्यः सानुमान्। एनमतिक्रम्य गम्यते किलार्यावर्तः। तदतिक्रमणायेदमपि मध्यमलोकसांनिध्यं किंचिदुज्झति।

यहाँ विमान की उधर्वगति के व्याज से भवभूति ने सूर्यलोक, तारामण्डल, कैलाश , अञ्जन, सुमेरू, गन्धमादन, हिमालय आदि पर्वतों और गङ्गादि नदियों के दर्शन भी करा दिए हैं। राजशेखर ने भवभूति से आगे बढ़कर पुष्पक द्वारा समुद्र, सेतु आदि स्थानों साथ हिमालय, कैलाश पर्वत, मन्दराचल, समुरू पर्वत, अलकापुरी, मानसरोवर, क्षीरोदधि, अमरावती, चन्द्रलोक के साथ वाराणसी और मिथिला का भ्रमण भी करा दिया है। इसी प्रकार रघुवंश के त्रयोदश सर्ग का प्रभाव भी इस प्रसङ्ग में द्रष्टव्य है। राम सीता से कहते हैं-

करेण वातायनलम्बितेन स्पृष्टस्त्वया चण्डि कुतूहलिन्या।
आमुञ्चतीवाभरणं द्वितीयमुद्भिन्नद्युंद्वलयो घनस्ते॥[33]

बालरामायण मे राम के कथन पर इसका प्रभाव स्पष्टता से परिलक्षित होता है-

क्षिप्तं त्वया काञ्चनकान्तिदाम यन्मत्तवारणमुपेत्य कुतूहलिन्या।
तेनामुना जलधरोऽयमरालकेषराषि सद्यस्तडिद्वलयवानिव पश्य जातः।।
हस्ते त्वया हारिणि हारयष्टिभिर्विमानवतायनतः कुतूहलात्।
कृते विदध्यात्सदृषीं प्रतिक्रियामितीव धाराम्बु घनो निरस्यति।।[34]

यहाँ पर तुलनात्मक अध्ययन की द्रष्टि से वाल्मीकि एवं राजशेखर द्वारा पुष्पक विमान यात्रा में वर्णित स्थानों के साथ कालिदास एवं भवभूति द्वारा वार्णित में स्थानों को सूचीबद्ध करके प्रस्तुत किया जा रहा हैं-

वाल्मीकि	**कालिदास**	**भवभूति**	**राजशेखर**
1.लङ्का 2.समुद्र 3.रणभूमि 4.सेतु 5.किष्किन्धा 6.पम्पासरोवर 7.शबरी आश्रम 8.पंचवटी 9.अगस्त्याश्रम 10.गोदावरी 11.शरभङ्गाश्रम 12.चित्रकूट 13.गंगा 14.भरद्वाजाश्रम 15.सरयू 16.नन्दिग्राम	1.लङ्का 2.समुद 3.सेतु 4.माल्यवान पर्वत 5.पम्पासरोवर 6.गोदावरी 7.पंचवटी 8.अगस्त्याश्रम 9.पंचाप्सर 10.सुतीक्ष्णाश्रम 11.शरभङ्गाश्रम 12.चित्रकूट 13.गङ्गा यमुना सङ्गम 14.श्रृङ्गवेरपुर 15.सरयू 16.अयोध्या	1.लङ्का 2.समुद 3.सेतु 4.माल्यवान पर्वत 5.पम्पासरोवर 6.गोदावरी 7.पंचवटी 8.सूर्यलोक 9.तारामण्डल 10.कैलाश 11.अञ्जन 12.सुमेरू 13.गन्धमादन 14.हिमालय 15.गङ्गा 16.अगस्त्याश्रम 17.चित्रकूट 18.गङ्गा यमुना सङ्गम 19.सरयू 20.अयोध्या	1.लङ्का 2.समुद्र 3.हिमालय 4.कैलास 5.अलकापुरी 6.मानसरोवर 7.मन्दराचल 8.क्षीरोदधि 9.अमरावती 10.सुमेरुपर्वत 11.चन्द्रलोक 12.सेतु 13.सिंहलदेश 14.माल्यवान पर्वत 15.अगस्त्याश्रम(ताम्रपर्णी) 16.द्रविड़देश (केरल) 17.सप्तगोदावरी 18.आन्ध्रप्रदेश 19.कर्णाटदेश(कावेरी) 20.महाराष्ट्र 21.विदर्भ 22.नर्मदा 23.लाटदेश 24.उज्जयिनी 25.मालवदेश 26.यमुना 27.पाञ्चालदेश 28.गङ्गा 29.महोदय 30.कान्यकुब्ज 31.सङ्गम 32.वाराणसी 33.मिथिला 34.अयोध्या

सन्दर्भग्रन्थसूची –

1. बालरामायण 1/16
2. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 2/15,18,41
3. बभूव वल्मीकिभवः पुरा कविःततः प्रपेदे भुवि भर्तृमेण्ठताम्।
   स्थितः पुनर्यो भवभूतिरेखयास वर्तते सम्प्रति राजशेखरः।।
   बालरामायण 1/16
4. बालरामायण 1/9
5. बालरामायण 1/7
6. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 124/9-11
7. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 124/24-28
8. बालरामायण 10/17
9. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 126/3
10. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 124/4-10
11. बालरामायण 10/20
    अत्र केनाप्यत्रेत्यर्थशक्तिमूलानुरणनरूपस्य।
12. बालरामायण 10/21 के पश्चात्
13. बालरामायण 10/22-42
14. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 124/11-16
    बालरामायण 10/42-47
15. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 126/17,
16. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 126/19,20
17. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 126/34-42
18. बालरामायण 10/51-62
19. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 126/43-52
20. वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड 127वाँ सर्ग
21. बालरामायण 10/67-68
22. बालरामायण 10/69
23. बालरामायण 10/70-73
24. बालरामायण 10/74,75
25. बालरामायण 10/76-78
26. बालरामायण 10/79-80
27. बालरामायण 10/81-83
28. बालरामायण 10/84-86
28. बालरामायण 10/87-91
30. बालरामायण 10/92
31. बालरामायण 10/93-95
32. महावीरचरित 7/20-27
33. रघुवंश 13/21
34. बालरामायण 10/25,26